

उत्तमपुरुष नमस्कारगारिकन कामगनु. शुरोपुरुष भेदगनु लोभीजननला
ई धनदिनु. जोरिलाइ धनदिनु. जोरिलाइ धनकनगनु. ६. आफु दोष. अ

उत्तमपुणि पातेन शुरोभेदन योजयेत्. लुब्धमर्थपदानेन समतुल्य
पराक्रमे. ६. आत्महिंसे यो ददात भिक्षादिदं परस्य च. गृहेत्क
र्म इवांगाणि परभावं च रक्षयेत्. ७. मनसा चिंतितं कार्यं वचसान
प्रकाशयेत्. मंत्रलक्षणा रूपाणां कार्यसिद्धिश्च जायते. ८.
कालाइनदिनु. अर्काको दोष भयापति नाशगारिदिनु. कसो भन्या. शिशिर
कालका कर्मले. गोप्यगारिकन लुकि वस्छुन. तस्ते अर्काको दोष प्रकाशन
गनु. ७. मनले चिन्तायाको. कार्यवचनले प्रकाशनगनु. मंत्रजै गुप्तगन्याम

॥ व. च. ॥
॥ २० ॥

रघुवगयाको कार्यतवसिद्धईछ ॥ ८ ॥ उपकाँरगई कसोभन्या. यादतलमा
लाग्याको काठ काँछालेकि किंछनतले ॥ रगयायछि शत्रुले शत्रुपनि उद्धा ॥ स
त्रु ॥ पनिकाममालागछ ॥ ९ ॥ आका विपनिना शत्रुवोकि पनि जानुघई शत्रु

उपकाएगहीतेन शत्रुणा सत्रुमुद्धरेत ॥ यादलग्नकारस्थेन कंठके
नेवकंठक ॥ ९ ॥ बहेदमित्रस्कंधेन यावत्कालं विवर्जयेत् ॥ तथे
वमागतकाले भिआत छदनिवास्मनि ॥ १० ॥ हेजिहे कटुकस्नेहो
मधुरं किं न भाषसे ॥ मधुरं वद कल्याणिलोकोयं मधुरप्रिय ॥ ११ ॥

कोकालआयाप्रछि घटभूमिमावस्थाफेनाशगर्नु ॥ १० ॥ हेजिहा मधुरकुर
कानतनवोल्याको ॥ मधुरकुरावोल मंगलभयाको सवैलोक लाइ मधुरकुराप्रिय

॥ राम ॥
॥ २० ॥
॥ ११ ॥

जिह्वाग्रमाश्रीलक्ष्मिवस्त्री न मित्रवांधवयनि जिह्वा माछु बंधनयनि जिह्वा
देवि ऊँछु मृत्युपनि जिह्वा माछु एतिका रणाले मिथो कुश्वोलनु ॥ १२ ॥ मिथो

जिह्वाये वसते लक्ष्मी जिह्वाये मित्रवांधवः जिह्वाये वंधनं चापी जि
ह्वाये मरणं कुर्वं ॥ १२ ॥ प्रियवाक्य प्रदानेन सर्वं नुष्यति जंतुवः त
स्मात् देवज्ञातमं किं वाक्ये पिदरिदता ॥ १३ ॥ अग्निदोगारदश्चैव श
स्त्रपाणि धनाय हाः क्षेत्रदाण्यहारी च संश्रते आततायिन ॥ १४ ॥

ऊगवोल्यापदि सवे लोकपनि सतो बहूँ न तस्का रणा वचनले दीद्रन हुनु
१३ ॥ आगोरा विदित्या विष्ववान् दिव्या शत्रुधा रणा गत्या धनको नाशगत्या धेतव
न्या स्वास्त्रि चो हित्या उभ्या एति थो क गत्या आततायिन भैनु ॥ १४ ॥ ॐ ॥

॥ बुचा ॥

॥ २९ ॥

एतिष्ठथोक्ता येकथोक्ता गत्याला इयति वेदांतपारुहत्यावाह्यराभयाय
निमारिदिनु तो वाह्यराभयायनि ब्रह्महत्याला गेदेन ॥ १५ ॥ राजाले यनि स

आततायिन मायांत मपि वेदांत पारग ॥ जिघांसंत जिघांसी यान्न
तेन बुद्ध हा भवेत् ॥ १५ ॥ राहुं पालयते नित्यं सत्यधर्म प्रणयगा ॥ १६ ॥
निर्जित्य परसेत्यानि पतिधर्म न पालयेत् ॥ १६ ॥ पुष्पं पुष्पं विवि
त्वेति मूलं छेदं न कारयेत् ॥ मालाकार इवांगानि तथा जाता तिसा

दा काल सत्यधर्म ले राज्य प्रतिपालगर्त ॥ परसेन्य नासगर्त राजाले धर्म जा
निक न प्रतिपालगर्त ॥ १६ ॥ राजाले मालिनि गम्याहे फल नात्रे टिपुन वाट न उबे
लनु प्रजाको विरां हेरि विराम अनुसार देडलिनु योग्यगर्त अन्यायले जिउ संपाति

॥ १७ ॥ राम ॥
॥ २९ ॥

शत्रुमित्र उदासीन॥ मध्यम श्रेष्ठ गुरु॥ एतिथोक्तज्ञांत्याकनसवेथाउमा
नासईछ॥ १८॥ आम्दानिनहेरिखर्चगर्भा॥ राजानभयाकादेसमाकलहगर्भा

आगेमित्रमुदासीनंमध्यस्थंस्थविर्गुरुं॥ योनवुध्यतिमंदात्मास
चसर्वत्रनश्यति॥ १८॥ अनायनयकर्ता॥ अनाथकलहप्रिया॥ २०
आतुरेसर्वभक्षिचसचसर्वत्रनश्यति॥ १९॥ कःकालःकानिमिष
त्रानिकोदेशःकोव्यागमः॥ कस्याहंकाचमेशक्तिरितिचिंतामु

आतुरमासवेथोक्थान्या॥ एतिथोक्थान्याकनचोदेनाशईछ॥ १९॥ कालभत्या
कोक्याहो॥ मित्रभत्याकोक्याहो॥ देशभत्याकोक्याहो॥ व्ययभत्याकोक्याहो॥ आगम
भत्याकोक्याहो॥ मकोहुंमेरेक्यासमर्थछ॥ भनीएतिवारीवाएचिंतनागर्नु॥ कालको

वस्यहोमनिज्ञान॥ २०॥

॥ कुन्वा ॥

॥ २२ ॥

सिंहदे उयेक गणसिकनु वकुलाछे उ एक गणसिकनु कषुगछे उच्चार
गणसिकनु कौवाछे उ पाच गणसिकनु ककुछे उ छ गणसिकनु गद

सिंहदेक वकादेकं शिष्यंच त्वारि ककु रात वायसात्यंच शिष्यंच
त्वत्सु नली शि गदभात ॥ २१ ॥ प्रभुत्वकार्यं प्रत्यं वा यो न कर्तुमि
च्छति ॥ सर्वारंभेषु न त्कार्यं सिंहदेकं विशिष्यते ॥ २२ ॥ ईदियाणि
तु सर्वस्य वक वत्यं डितो नर ॥

॥ हाछे उतिन गणसिकनु ॥ २१ ॥ के
हिकाम आरंभ गमायनि उकाम सिद्ध न भै नष्टो डनु त्यो एक गण सिंहको सि
कनु ॥ २२ ॥ वकु जै सानि भै मनुष्यले आफुले गर्नु न सक्या को काम मा पंच ईदि
यति ग्रह गणिक न सबे काम साधना गर्नु एति एक गण वकुला को लिनु ॥ २३ ॥

॥ राम ॥

॥ २२ ॥

विहाने उठनु शत्रुसित जुद्धगर्नु ॥ इष्टमित्रवरो वा एगर्नु स्त्री सहित गरी क
नवानु ॥ इचारगुणः कृष्ण कोलिनु ॥ १४ ॥ स्त्री भोग मागुषगर्नु ॥ वेलामासैग
हगर्नु ॥ ज्ञानिवंधु संगहिडनु अहंकारनगर्नु ॥ धूर्तजनु ॥ एतिपाचगुणां काग
कार्यकालोपयन्नाति सर्वकार्यानि साधयेत् ॥ १३ ॥ प्रागुत्थानं च
युद्धं च संविभागं च बंधुषु ॥ स्त्रियमाक्रम्य भुंजात शिष्यचत्वारिकक
दात् ॥ १४ ॥ गूढमैथुनधृष्टत्वं काले वाधवसंग्रहः ॥ अप्रमादिसुधु
तंच पंचशिष्ये च वायसात् ॥ १५ ॥ ब्रह्ममीचात्यमंतुष्टमुनिंदुशिषुचे
छिडलिनु ॥ १५ ॥ भयाधैरेवानु नभया थैरेवा इ संतोषकुरु चादे सुतनु

॥ कुचा ॥

॥ २३ ॥

चादै उठनु स्वामी भक्त हुनु सुरे हुनु एति छ थोक कुकार छे उलिनु ॥ २४ ॥
विश्राम नगरि कन भारि वो कनु चि सो तातो न भनु ॥ अलिकति पाइ कन

स्वामि भक्त समूर अथडे ते ह्या न तो गुणा ॥ २५ ॥ अविश्रात वहडा
रं शीतो ह्यं च न विदति ॥ सुसंतुष्टो भवेति त्यं त्रितिशिष्ये च गर्ह
भात ॥ २६ ॥ शिस तेना गुणाः प्रोक्ता सुसुकुर्वाद्भिचक्षणम्
शशष्पतिरिपुं सर्वान् न जेयश्च भविष्यति ॥ २७ ॥

यनिसंनोष हुनु त्योति न गुण गदा हासित सि कनु ॥ २८ ॥ एति वीस ग
ण संजुक्त भयाको विचक्षण ले सबै शत्रु को संहार गर्छ न जस पनि हुँ छु

॥ एम ॥

॥ २३ ॥

॥ २४ ॥

भुवनभयाको जानिभंनुमनुष्यले **स**तापभयाको सर्वे आफ्नाचित्तमा नाश
गर्छन् **पर**स्य रुडयकारणरीकत साधुजनको कलह ऊँछ **२९** **पे**रभत्या
एकछ **शि**र्भत्या डुईछन् **स**मुद्रमा जादा विरोधभयो **ना**शभयो **त**स्ते आफ्ना

अमुवायोमनुष्याणां मत्पुनः प्रचेतसाम् **पर**स्य एकारेण पुंसां
भवति विग्रह **२९** **य**ेकोदा वृथग्यी वा ये चरंति वहार्ये वे **आ**साधि
तविनस्पति भेरुं डाइववक्षिणो **३०** **व**सने सति कर्वाति येन केना
पिसं तति **वृ**क्षवाणागोपुच्छे पुरादा सति यथा **३१**

मानिस्वकनविरोधनगर्नु **३०** **वि**पत्ति कालमाकसेछे उभजना गरिकनपति
उवको नासगर्नुभत्या श्रीए मर्द डले भालु बांदाको सहाय गरिकन आफ्ना वि

पति ता एनागना थ्या तस्ते तरु
गर्नु यछ **३१**

॥७८॥

॥२४॥

सामेलभयापछिसमुद्रपनि तनु ऊँ छ वां नर हरु ले श्रीरामचंद्रका आज्ञा
ले समुद्रमासेतुवधसायावाध्याथ्या ॥ ३२ ॥ युधिष्ठिर राजालाई उर्जाध
नभंछनतिमिहरुसयजनाहामिहरुयाचभाउ ॥ अर्कासितविरोधभयाका

उस्तरेसागरंतिर्नसमुद्रवानरंवलम ॥ अभुतपूर्वगमैणसेतुवध
थसागरे ॥ ३२ ॥ युरंशततवयंयंचविरोधंचपरस्याम ॥ योराक्रम्य
मानेतुवययंचातसतम् ॥ ३३ ॥ हित्वाभित्वाचकर्मानिकृत्वावेति
सातयेत् ॥ सातयसमतायांति यपापरमेवच ॥ ३४ ॥

ठाउमाएकेऊनुपर्छतिमिहरुसितपरस्परविरोधभयापनिमिलनुपर्छ ॥ आफु
सितमित्रछायापतिधर्मभेदगम्यापनिशत्रुभावऊँदेनआफुमित्रआफुऊँदपरभ

॥२४॥

॥७८॥

॥२४॥

॥७८॥

॥२४॥

मनुष्यको जो रचिंता घोर को जो र मेथुन स्त्री को जो असो भाग्य वस्त्र को जो
रघाम ॥ ३५ ॥ छैरे हिजा का मनुष्य चांदे बुछाई छै नहि इत्या घोडा चांदे बुछाई छै
मेथुन न भया पाछे स्वाहि चांदे बुछाई छै मेथुन नग भाषि छै घोडा चांदे बुछाई छै

चिंता ज्वरे मनुष्याणां मश्चानां मेथुनं ज्वरं ॥ असो भाग्य ज्वर स्त्रीणां व
स्त्राणां मानवो ज्वर ॥ ३५ ॥ जघ्वा जरा मनुष्याणां मरुद्वा वातिनां तरा ॥
अमेतनां जरा स्त्रीणां मश्चानां मेथुनं ज्वर ॥ ३६ ॥ कष्टा वृत्ति परार्थीनां
कष्टा वासानिराश्रया ॥ भूत पूर्वार्थ संयुक्त वर्ष कष्टा दीदता ॥ ३७ ॥

३६ ॥ मनुष्य को कष्ट अर्का को भरे सागरी वलु अरु कष्ट कया भत्या अश्रयेन दुःखा
अरु छे उ आसन गरी वलु फेरि अरु कया कष्ट भत्या अधि धन पाणि पूर्ण पद्धि दीरि डक

३७ ॥ न त्या डुलो कष्ट हो ॥ ३७ ॥

॥ कुचा ॥
॥ २५ ॥

सधेधननुल्पाउनुभनि इच्छागर्वा गोगीमुखपरदेसि अर्काकोचाकरि एति
घाचजनाजीवभयापतिगयाकोहो इतहरु दुःखिभनीजानु ॥ ३७ ॥ सुनआदिउ
मागहस्थ गाइकोउदनइमा घरमाभनतययाकीखाही एतिमानिसनकनु

अधिनोबाधिनोमुखप्रवासिपरसेवक जीवितोपिमृतः यंच यंचेते
दुःखभागिन ॥ ३८ ॥ अहिरण्यमदासीकं गृहगोरसवर्जितम् एति
कूलकलत्रंचनरकस्यापराविधि ॥ ३९ ॥ स्थूलजघोयदारामौलम
लः शब्दगामिनः घनकेशीयदासीदातदाते दुःखभागिन ॥ ४० ॥

त्यहुभनिजानु ॥ ३९ ॥ श्रीरामचंद्रकोजघापाउदुलोछलक्ष्मणकोहिउदाशब्द
भाउछ ॥ शीताकोकेशुलोघनछ एतिअलक्षणाते दुःखीभयाकोही ॥ ४० ॥

राम
॥ २५ ॥

जोकोहीमनुष्यलेअर्काछेउवाचनकरदिनजाईकनवांछनस्योमनुष्यहलुकाभै
जांछइइसमानभयापति॥ ४१ ॥ अर्काकोअन्नवात्याअर्काकोवस्त्रलाउत्याअ
र्काकोधानिवात्याअर्काकोस्वाहिलियाअर्काकोघरमावस्त्राएतिगर्वापुरुष

योयत्रनित्यमायातिभुक्तायांतिदिनदिनेसतचलघुतायातिबदिश
कसंमोना॥ ४१ ॥ यरात्रपरवस्त्रंचपरयातंयस्त्रियपरस्पचगृह
वासशक्तस्यापिश्रियंहरेत्॥ ४२ ॥ असोच्यानीद्रनीविद्वांतशोच्यपुत्र
वान्महो॥ असोच्याविधवानाणिपुत्रपौत्रप्रतिष्ठित॥ ४३ ॥

इंदुतुल्यभयापनिलक्ष्मीनासकंछ॥ ४२ ॥ निर्धनिभयापनियंडितजनलेशोचनाग
र्तुयदेनघोराभयाकामनुष्यलेपतिशोचनानगर्तुविधवाभयापनिपुत्रपुत्रीभ

अर्काकोवस्त्रलाउत्याअर्काकोघरमावस्त्राएतिगर्वापुरुष॥ ४३ ॥

॥ बुद्धा ॥
॥ २६ ॥

शमस्तलोकलेधनलाई पुजा गर्छु न। शरीरलाई पूजा गर्दै न। छर धन भयापछि
चांडाल पनि वडो पुरुष हुन्छ ॥ ४४ ॥ धनले धर्म हुन्छ। धनसंवे प्रतिष्ठा हुन्छ। धनहुँ
त्यामानिस्को जिव हुन्छ। निर्धनी मानिस्को जीव छैन। मर्यादो वा हुन्छ ॥ ४५ ॥ ० ॥

विभवा सर्व पूज्यं तेन स एण देहिनी ॥ चांडालोपिनरः श्रष्टा यस्या
स्त्री विपुलं धनं ॥ ४४ ॥ धनमाहुः परं धर्म धने सर्व प्रतिष्ठति ॥ जीवंति
वनिचो लोके मृता ये त्व धनानरा ॥ ४५ ॥ अति संपति मायत्रो भेतव्यं
पतनाद्भयम् ॥ अत्युच शिष्य हरुः सत्यं कुजेन पात्युत ॥ ४६ ॥

छोरे संपति भयापछि। बसला भनिदछु ॥ कसो भत्या अति उच्च धर्बत वजपा
त हुन्छ तल्लो होला ॥ ४६ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ राम ॥
॥ २६ ॥

सर्वे भोक्तव्यान्वालेन धोया को क्या छु सौं ठे रोगी भया को क्या सुख छु जस्का स्वास्ती
असैनोधि उस्का घा सुख कै है यनि ऊं दे न ॥ ४७ ॥ सुभिद्वाभया पछि चेताला को
सुविष्टाई छु रोगी न भया सदा सुखि ऊं छु स्वास्ति भाक्रा वस मा भया दि को दिन व

को भक्षो भक्ष को नित्यं किं सुखानि च रोगिनां ॥ यस्य भार्या त्वसंतुष्टा क
च तस्योत्सवं गृहे ॥ ४७ ॥ सो भक्ष क र्व को नित्यं सुखानि त्वं मरोगिना
न ॥ भार्या भ सर्व सायस्य तस्य नित्योत्सवं गृहे ॥ ४८ ॥ सर्व पर व सं इः स
सर्व मात्म व सं सुख ॥ एतद्दिद्या त्समासे न लक्षणा सुख इः खयो ॥ ४९ ॥

दो सुख ई छु ॥ ४८ ॥ अति दुःख भया को शत्रु को कावु माव ह्यु अति सुख भया को आ
क्राम नो ग्य माव ह्यु कावु न भे क न सुख इः ख को ल क्षणा संपले जां न ॥ ४९ ॥

॥ बुद्धा ॥

॥ २१ ॥

सुखका अंतरदुःख आउछ दुखका अंतर सुख ऊँछ सुख दुख भत्या के कल
त्रका चक्र के मनुष्यका ऊँछ ॥ ५० ॥ सुख लोक वाडलो भयाका ठाउ माय भुवृत्ति

सुख स्थानंतरदुःख दुःख स्थानंतर सुख सुख दुःख मनुष्यानां चक्रवत्
परिवर्तते ॥ ५० ॥ बह्नुभि सुख संघातै रन्यो न्यैः यभुवृत्तिभिः ॥ छादयंति
गुणा सर्व मेघै रिव दिवाकर ॥ ५१ ॥ असगा सह संगे राको नया त्पभमां
पति ॥ पयोशि सौंडिनी हस्ते मद्यमित्यनिधीयते ॥ ५२ ॥ ५ ॥

ले गुण ज्ञान एव तेन मेघले श्रीसर्ज्य काते ज लावया ज स्ते गुण प्रकाश गर्नु ऊँदे
न ॥ ५१ ॥ ननिका साथ भया पछि अधम गति ऊँछ सुख निछे उका हात ले दिया के

इदं पति मय देवा लाउछ संग दोष कुनाले ॥ ५२ ॥

॥ राम ॥
॥ २१ ॥

असाधुसंगका दोषले साधुपनि असाधु ईछे ॥ अंधकार भया कारण विमा सो जे
बाधेपनि वांगो ईछे न ह्ते ॥ ५३ ॥ निकोसंग भया पछि ॥ तनिको पुरुषपनि निको ई

असतसंपर्क दोषेन अधमायांति साधवः ॥ मार्गनिमिर दोषेन समो
पिबिसमाद्यते ॥ ५३ ॥ उत्तमै सहसंगेण कोणायाति समुन्नति ॥ मुर्धा
तुलानिधार्यते गुणितैः कुसुमै सह ॥ ५४ ॥ किंकरिष्यति संपवः स्वभा
वो डरितकमः ॥ यश्यामु फलमध्वस्व क पायोना म्भ्रतांगतः ॥ ५५ ॥

छ ॥ फलसितउत्पाकातृणपनिसिरमाला उंछ ॥ ५४ ॥ भलासितसंगत भया
पनि स्वभाव कुद्देन ॥ आकका फलभिन्नको कोयो अमिलो गुलियो ईदेन ॥ ५५ ॥

॥ व. चा ॥

॥ २८ ॥

सर्वस्येभारिहालिकन निम्काफल रोप्यापनि मरुदुदसदाछिर्कदेरह्य
पनि केहेपनिगुलियोइदेन ॥ ५६ ॥ पुस्तक लेख्याकोविआ घरइकाहातदि

सर्करासतभारेण मध्वनिवप्रतिष्ठितं ॥ मधुछिरसमावृष्टिर्निव
किं मधुरायते ॥ ५६ ॥ पुस्तकेषु च याविद्या घरहस्तेषु यधनं ॥ का
ज्यकाले च संप्राप्त न साधिघानतद्वनं ॥ ५७ ॥ दुरस्थानि च मित्रा
णि निस्त्रेहोचैव वाधवाः ॥ प्रयोजनं किं कर्त्तव्यमर्थितो निष्कलाति ॥

याकोधनकामपरिआयाकावेलासा त्योविद्यापनि धनपति कामला ग्देन
५७ ॥ राठाकोमित्र प्रीतिनभयाकोभाइ क्यकांसपाईयला माग्याकोनपायाज

॥ राम ॥
॥ २८ ॥

इति श्रीचानक ऋषि कृतं बुद्धिचानके सार संग्रहे भाषायां इति यथाय ॥ २ ॥
कालमाशत्रुकोपनि संधिगर्नु कालमा मित्रे सितपतिविग्रहगर्नु कार्यका

इति श्रीचानक ऋषि कृतं बुद्धिचानके सार संग्रहे द्वितीयशतद्वि
तियध्यायः ॥ २ ॥ काले च रिपुणा संधि काले च मित्रे विग्रहः कार्य
कारणमाश्रित्य कालक्षयति पंडितः ॥ १ ॥ कालः यच्चति भूतानि
कालसंहरते प्रजाः कालः सुप्तेषु जागर्तिः कालो हि इति क्रमः ॥ २ ॥

हेतुले दिनकाटनु ॥ १ ॥ कालले प्राणायका उच्छे कालले प्रजासंहाणच्छे नः
कालले सुत्याकोपनि जागतगच्छे एतिकाएणले काललंघनमर्नुहदेन ॥ २ ॥

॥ कृचा ॥

॥ ३८ ॥

कालदेविर्वा मरो पृष्ठ कालदेवि फल वृद्धि ईष्ट ॥ कालदेवि सृष्टि ईष्ट मंह
रयनि ईष्ट ॥ ३ ॥ आकास दिशा पृथिव्या निचंद्र सूर्यो अग्नि वायु एति सर्वे
काललेता शगर्ह एति कारणा ले कुलो भन्या को काल हो ॥ ४ ॥ सुं न्या मानि स

कालाग्रो हते बीजं फलं काला प्रवर्तते ॥ कालो हि वर्द्धते दृष्टि पुनः का
लो हि संहरते ॥ ३ ॥ खंडि शो भूमि राघश्च चंद्रका नल मारुतः ॥ सर्वसं
हरते कालस्तस्मात्कालो महतां ॥ ४ ॥ किं करिष्यति वक्ता श्रोता
यद्यन विद्यते ॥ लग्न क्षयण कर्ग मं रजकः किं करिष्यति ॥ ५ ॥

न भया काठा उभाव स्ता मानि स्त को क्या प्रयो जन छ ॥ कलो भन्या नांगा
हरु का देस मा ॥ धोवी हरु गो वस्था काले क्या प्रयो जन छ तस्ते ॥ ५ ॥

॥ सम ॥

॥ ३८ ॥

परस्त्री परधर अर्काको अपवाद करु गुरु का ठाउमा हास्य जन्म गरि छाडनु
पर्छ ॥ ६० ॥ यदि कामना शगमा अर्थात् प्रिय करु गन्ती हस्तो मित्र संग रह नगर्नु ॥

परदार परस्व च परिहादे परस्व च ॥ परिहास्य गुरु स्या ते यत्नतः प
रिवर्जयेत् ॥ ६० ॥ परोक्ष कार्य हेतु प्रत्यक्ष प्रिय वादिन ॥ वर्जये
त्ता दशमित्र विश्व कर्म ययो मुखे ॥ ६१ ॥ कुदेशं च कुवृत्तिं च कुनंदि
का कुडव्य च ॥ कुभोज्यं च वर्जयेन्नित्यं कुअन्नं सदान च ॥ ६२ ॥ ७ ॥

विषको गायी का मुखमा डुदले ठाक्या को जस्तो हो ॥ ६१ ॥ कुदेशमा कुवृत्तिं
कुवृत्तिं किल्ली कुनदि कुडव्य कुअन्न एति जातिले सबै छाडनु पर्छ ॥ ६२ ॥

॥ बु. वा. ॥

॥ ४६ ॥

स्वर्गका अपसरा इव सि रंभा तिलो चमा गोपालि मे नि का एति अस्मज्जति
कि भयापनि अका की स्वाग्नि माथि चहाई इच्छा न गर्नु दाण रहनु ॥ ६३ ॥ केहि
कार्य गरिक न साफल्य चादे भया को भयापनि काममा विप्रामा फिक रक्षा ऊंछ

उर्वशि यदि रूपेण रंभा यदि तिलो चमा गोपालि मे नि का चैव वर्जनी
या परस्त्रिय ॥ ६३ ॥ ये सु कार्येषु विद्यासु श्रुसापि कलो दय धिय
तिषु महा दोषः परिवर्जं द्विचक्षुषा ॥ ६४ ॥ भक्ता भक्त समं प्रेक्षेत्
कार्या कार्य चतुल्यता सदा कार्येषु संदेहा भेत व्यं सर्वदा बुधै ॥ ६५ ॥

उठा उमा महा दोष दुन्या काम एस्तो कार्य ज्ञाति हरु ले छा डनु पर्छ ॥ ६४ ॥ भक्त अ
भक्त सम गर्नु कार्य भ कार्य तुल्य गर्नु सदा कार्य मा संदेह गर्ने एस्तो सित सधै

कालि माय नि सति जन इण्डु पंथ ॥ ६५ ॥

गम ॥

॥ ४६ ॥

अकलीसितपनि डराउनु राजासित जानि भयाका शत्रुसित परापूर्वदेखी
विरोधभयाका शत्रुसितपनि डराउनु यछ ॥ ६६ ॥ रुषको वायु पद्मको शिशिर

भेतव्यं मकुलीनानां राजापो पत्नीविनां ॥ भेतव्यं ज्ञानशत्रुनां कृत्वा
पूर्वापकारिनां ॥ ६६ ॥ पादपाताभयं वाटः पद्मानां शिशिराभयं ॥ पर्वता
नाभयं वाटजंतुनां द्विपदाभयं ॥ ६७ ॥ माताददिविषं दद्यापिताविक्री
यते श्रुतं ॥ राजाकरेति चान्यायं कोमेजाताभविष्यति ॥ ६८ ॥ ७ ॥

पर्वतको वज्र जंतुको भय मनुष्य ॥ ६७ ॥ आमाले विष दियो पछि वावाले बेच्या
पछि राजाले जनाय गयो पछि कस्को सरण मा जानुको रक्षा गर्ला ॥ ६८ ॥ ० ॥

॥ पु. वा. ॥
॥ ४७ ॥

जाहादेशमाभयापनि राजा मंत्रि पुरोहित सवै चोर येस्ता ठा उमा क्या गर्ज
जाहादेशि ऊंछ उठा उमा भयमात्रे ऊंछ ६९ विधाता लोक ममा लेखा को अ

यत्र राजा भयं चोर सुमंत्रि सुपुरोहित तत्राहं किं करिष्यामि यतो रक्षा
ततो भयं ६९ विधाता लिखिता यस्या ललाता क्षनमालिका देवो
पिनहि शक्रोति नहि संलिखितु पुन ७० कर्मस्ताहि प्रधानेन बुद्धि
नाकिं प्रयोजनं प्राप्ता तस्य कृतो बुद्धि स्तेन देवो भविष्यति ७१

क्षर देवलेपनि मेहन सक्तीतन ७० दुलो नस्या को कर्म बुद्धि मात्र भयाले
क्या प्रयोजन छ पुं गाले क्या बुद्धि गन्यात सै हो ७१ ॥ ७ ॥ ७ ॥

॥ राम ॥
॥ ४७ ॥

कर्ममाभयाको अवस्य ईछुः वशिष्ट ऋषीले भुमलग्नहरी दिन दिया
को बेलामा शिताविवाह गयाको तैपनि शिता अनि दुखी तभयो तल्लै

कर्मदोहि प्रधानेण सति कृष्टे भुभे गृहे ॥ वशिष्ट दत्तलग्नेपि
जान किं दुःखभागिनी ॥ ७२ ॥ मानुकले भवेत्तस्मी न दोषो
पि गणसंहतिः ॥ गणोपि दोषतां याति वक्त्राभूते विधातरी ॥
॥ ७३ ॥

एतिकाणाले कर्मदुलो ॥ ७२ ॥ अनुकूलनि को भयापदि दोषलेपनि गण ई
छु विधाता विमुष भयापदि गणालेपनि दोष ईछु ॥ ७३ ॥ ४ ॥

॥ बुचा ॥
॥ ४८ ॥

ज्ञानिमात्रभयालेकाईछ ॥ कर्मले घठाया काठाउमान जाइऊ देन ॥ मू
को घनि ऐंश्चर्ज्य ऊँछ ॥ बुद्धि नत्या को कर्म अनुसार को ईछ ॥ ७४ ॥

किं करोति नर प्राज्ञः प्रक्षमाणाः स्वकर्मभी ॥ प्राज्ञ नैव हि
सुषान्तिः बुद्धि कर्मानुसारिणी ॥ ७४ ॥ हस्तस्य भूषणं दो
नं सत्यं काष्ठस्य भूषणं ॥ श्रुतस्य भूषणं कर्माः भूषणैः
किप्रयोजनम् ॥ ७५ ॥

हात को गहना दान गर्नु ॥ कंठ को गहना सत्य बोलनु ॥ कान को गहना
धर्म सुनु ॥ एस प्रकार ले गहणा लाया को क्या प्रयो जन छ ॥ ७५ ॥

॥ राम ॥
॥ ४८ ॥

स्वास्त्रिको गहना मुचरित्र रुखको गहना फूल पुरुषको गहना आक्रा
रुर्ति राजाको गहना दया कृ पाशुनः ॥ ७६ ॥ नक्षत्रको गहना चंद्रमा

चरित्र भूखणं स्त्रीनां दुमाणां पुष्प भूखणं ॥ स्ववृत्ति भूख
नं पुंसा यतिनी भूखणं कृपाः ॥ ७६ ॥ नक्षत्र भूखणं चंद्रो
नारिणां भूख न पती ॥ चतुर्था भूखणं गहना सील सर्वत्र भू
खणम् ॥ ७७ ॥

नारागणा स्वास्त्रीको गहना आक्रा स्वामी चरित्रिको गहना राजा
सर्वेको गहना सील स्वभाव हो ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥

बुचा

॥४९॥

उलोपुरुषले अमांन्यगयापनि निको हो नीचामानि भो मांन्यगयापनि न
निको कसो भन्या श्री कृष्णका चरणाले मर्दन गर्दा गर्दे नाग को शिर सो भाभ
योत हो ॥७८॥ असुचि वस्तुले न लिखा को भयापनि भूमिमा गया को पानि सुची

महता परिभवं श्रेष्ठं न नीचामान मुत्तमं कसो चरणघाते कालि
यस्य विभूषनं ॥७९॥ भुचि भूमिगतं तोयं यत्र लेपो न विद्यते लेपस्था
ने परित्यज्य अंत्यस्थाने भुचि सुची ॥८०॥ भुचि भूमिगतं तोयं भुची
नारि प्रतिवृता भुचि क्षमा करे राजा सर्वतोषी ब्राह्मण भुचि ॥ ८० ॥

लिखा को पानि छोडि अरू धाउ को पानि सर्वे भुचि हो ॥८१॥ भूमिमा भया को पानि
भुचि प्रतिवृता स्वानि भुची क्षमा धारे राजा भुचि सर्वतोषी ब्राह्मण भुची ॥ ८० ॥

राम

॥४९॥

वहनिलेकासोभुद्रुईछ अतिलाले तावो भुद्रुईछ रजस्वगुभयाकीस्वासी
भुद्रुईछे बेगले गयाको नदि भुचिईछ ॥ ८१ ॥ बावाले अंत पूरिदिछ न आ

भस्मनाभुद्रुतेकांस्य तावुलेत सुधते ॥ रजसाभुद्रुते नारि नदीवे
गेनभुधति ॥ ८२ ॥ पितुरेत पूरंद आत्मा तुर्द झां महानसं ॥ गोषु चा
त्म समंद आत्स्वय मेव रुषिं व्रजेत् ॥ ८३ ॥ कविलाहिरयानेन ब्राह्म
णी गमते तच्च वेदाक्षरविचारैः समुद्रोत्तरकं व्रजेत् ॥ ८४ ॥

माले भान्सादिछ न गाइले आफु संमदिछ न आफुले खेत कामाउनु ॥ ८५ ॥ क
पिलगाईको उदघाया पछि ब्राह्मणी गमन गवा पछि वेद पाएग्या पछि त्यो भू

इतरकवासगली ॥ ८५ ॥

॥ बुचा ॥

॥ ५० ॥

शुद्धिका हातले जुनवा सगले येक मै हास म्म वाइ वस्या पछि त्यो वाहा रा
ज्जुं ज्वाल् शुद्ध भयो मया पछि काका ऊंछ ॥ ८४ ॥ उदन भया किली धून भ
या को भोजन मलीन वस्त्र लाउ न्या लाइ गहना विघ्राहीन भया को वाहा

शुद्धि हसे नयो भुक्त मास मेकं निर्गतं ॥ जिवमानो भवेत् शुद्धे मृ
त स्वातथ जायते ॥ ८४ ॥ स्नात होता तु यो नारी घृत हीनं तु भोजनं
वस्त्र हीन मलीकारं विघ्राहीनं द्विजोत्तमं ॥ ८५ ॥ सो भते सलिले
पद्मं सो भते द्विष वो द्विजः ॥ शो भते तपसा युक्तो व्राणं भू एष सो भते ॥

रा एतिसो भाऊ देन ॥ ८५ ॥ पानिमा क मल को फूल शोभा ऊंछ ॥ तानि भया को वा
हा शोभा ऊंछ ॥ तपस्याले युक्त भया को सोभा ऊंछ ॥ घायले भू को सोभा ऊंछ ॥

॥ राम ॥

॥ ५० ॥

॥ ८८ ॥